अध्याय-5 | प्रेमचंद के फटे जूते | हरिशंकर परसाई Worksheet-1

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan

JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. लेखक हरिशंकर परसाई का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(अ) 1922 में उ. प्र. के इलाहाबाद में
(ब) 1922 में म. प्र. के होशंगाबाद में
(स) 1922 में उ. प्र. के वाराणसी में
(द) 1932 में बिहार के पटना में

2. प्रेमचंद के फटे जूते पाठ में लेखक ने प्रेमचंद का कैसा चित्रण किया है?

(अ) व्यंग्य चित्रण
(ब) अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण
(स) यथार्थ चित्रण
(द) बनावटी

3. हरिशंकर परसाई जी ने प्रेमचंद जी की अधूरी मुस्कान को किस बात का सूचक माना है?

(अ) दिखावे की प्रवृत्ति का सूचक
(ब) अवसरवादिता का प्रतीक
(स) उपहास, व्यंग्य
(द) लज्जा या संकोच

4. प्रेमचंद के फटे जूते पाठ के संदर्भ में जिनके देख दुख उपजत है, तिनको करबो परै सलाम। यह कथन किसका है?

(अ) कुंभनदास का
(ब) नंददास का
(स) प्रेमचंद
(द) सुंदरदास का

5. परसाई जी के अनुसार प्रेमचंद जी के जूते से बाहर झांकती पांव की अंगुली क्या संकेत करती लगती है?

(अ) घृणित वस्तु / सोच की ओर पैर की अंगुली से संकेत
(ब) प्रेमचंद जी की गरीबी का प्रदर्शन
(स) होरी की नेम-धरम वाली कमजोरी की ओर संकेत
(द) इनमें से कोई भी नहीं

6. परसाई जी के अनुसार चंद जी ने फटे जूते ढँकने का प्रयास क्यों नही किया ?

(अ) वे फ़ोटो का महत्त्व नही समझते थे।
(ब) वे महान कथाकार व लेखक थे।
(स) उनमें दिखावे की प्रवृत्ति नहीं थी।
(द) वे फ़ोटो खिंचाने को अत्यंत उत्सुक थे।

7. प्रेमचद के फटे जूते पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया गया है?

(अ) मिट्टी, पत्थर का कुछ उभरा हुआ भूभाग
(ब) छोटी पहाड़ी की तरह थोड़ा उठा हुआ भूखंड
(स) रास्ते में आने वाली रुकावटें/अवरोध
(द) मिट्टी का वह ऊँचा ढेर जो प्राकृतिक रूप से बना हो

8. प्रेमचद के फटे जूते पाठ के संदर्भ में लेखक यह क्यों सोचता है कि उस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी?

(अ) वह एक साहित्यकार थे
(ब) प्रेमचंद को किसी तरह का शौक नहीं था
(स) वह फटे पुराने वस्त्र पहनने में अपनी शान समझते थे
(द) उनकी कथनी और करनी एक समान थी

9. 'प्रेमचंद के फटे जूते' निबंध में प्रेमचंद जी की व्यंग्य मुस्कान लोगों की किस मानसिकता पर प्रहार है ?

(अ) दिखावा व समझौतावादी मानसिकता
(ब) राजनीतिक हित साधने वाली मानसिकता
(स) धार्मिक अंधभक्ति वाली मानसिकता
(द) धन लोलुपता व स्वार्थी मानसिकता

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
VIDEO COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

10. **'अब तो जूते की कीमत बढ़ गई है' पंक्ति से परसाई जी का क्या आशय है ?**

(अ) साहित्यकार अपनी वेशभूषा से जाना जाता है।

(ब) धनवान को अधिक सम्मान मिलने लगा है।

(स) प्रेमचंद जी टोपी और जूते के आनुपातिक मूल्य में उलझ गए।

(द) प्रेरणा

रिक्त स्थान :

11. प्रेमचंद के पाँव में _____ के बने जूते थे।

12. प्रेमचंद के चेहरे पर _____ मूंछे थीं।

सत्य / असत्य

13. प्रेमचंद ने दिखावटी जीवन कभी नहीं जिया।

14. रानी नागफनी कहानी की रचना हरिशंकर परसाई जी की नहीं है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. लेखक के जूते फटे होने से उसे कैसे परेशानी हो रही है?

16. कुंभनदास का जूता कहाँ आने-जाने में घिस गया था?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए- जिसे तुम घृणित समझाते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पांव की अँगुली से इशारा करते हो?

18. प्रेमचंद फोटो में कैसे नजर आ रहे थे?

निबंधात्मक प्रश्न

19. आपकी दृष्टि में वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

20. 'तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे' के माध्यम से लेखक हरिशंकर परसाई क्या कहना चाहता है?

HOTS

21. प्रेमचंद ने फटे जूते में भी अपनी फोटो खिंचा ली, पर लेखक ऐसा कभी न करता, क्यों?

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

Under CSR Support by
ipca | Foundation
missiongyan

1. (ब) लेखक हरिशंकर परसाई का जन्म 1922 में म. प्र. के होशंगाबाद में हुआ।
2. (स) प्रेमचंद के फटे जूते पाठ में लेखक ने प्रेमचंद का यथार्थ चित्रण किया है।
3. (स) लेखक हरिशंकर परसाई जी ने प्रेमचंद जी की अधूरी मुस्कान में उपहास, व्यंग्य की भावना देखी।
4. (अ) प्रेमचंद के फटे जूते पाठ के संदर्भ में जिनके देख दुख उपजत है, तिनको करबो परै सलाम-यह कथन कुंभनदास का है।
5. (अ) परसाई जी को लगा प्रेमचंद जी जिसे घृणित समझते उसकी तरफ पैर की अंगुली से इशारा करते ।
6. (स) प्रेमचंद जी में दिखावे की प्रवृत्ति थी ही नहीं न पोशाकें बदलने का गुण ।
7. (स) यहाँ टीला/टीले शब्द का प्रयोग रास्ते में आने वाली रुकावटों के लिए हुआ है।
8. (द) प्रेमचंद के फटे जूते पाठ के संदर्भ में लेखक यह इसलिए सोचता है कि उस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी क्योंकि उनकी कथनी और करनी एक समान थी।
9. (अ) प्रेमचंद जी की व्यंग्य मुस्कान दिखावटी और समझौतावादी मानसिकता पर प्रहार करती है।
10. (ब) जूते को समृद्धि का प्रतीक माना गया है तथा बताया गया कि गुण के स्थान पर धन महत्त्व रखता है।
11. **रिक्त स्थान :** केनवास
12. **रिक्त स्थान :** घनी
13. **सत्य / असत्य :** सत्य
14. **सत्य / असत्य :** असत्य
15. उसका पंजा घिस रहा है।
16. फतेहपुर सीकरी राजा के पास।
17. प्रेमचंद ने सामाजिक बुराइयों तरफ कभी आंख उठाकर भी नहीं देखा। उन्होंने कभी उनसे समझौता नहीं किया।
18. प्रेमचंद फोटो में अत्यंत ही साधारण वेशभूषा में नजर आ रहे थे। फोटो में उनके साथ उनकी पत्नी भी थी। प्रेमचंद ने धोती-कुरता पहना हुआ था और सर पर टोपी लगाई हुई थी। उनके पैरों में कैनवास के जूते थे, जो बड़ी ही बेतरतीबी से बंद थे। उनकी लोहे की पतरी निकल आई थी। बाएँ पैर का जूता फटा हुआ था। उसमें से उनकी अंगुली बाहर दिखाई दे रही थी। उनके चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान थी।
19. मेरी दृष्टि में वेश-भूषा को लेकर आज के लोगों की सोच में काफी परिवर्तन आया है। आजकल लोग अपनी वेशभूषा के प्रति बहुत जागरूक हो गए हैं। वे मौके के अनुसार वेशभूषा का चयन करते हैं। आज लोग घर से शानदार पोशाक पहनकर बाहर निकलते हैं जिससे हमें इनकी आर्थिक स्थिति का पता नहीं चलता है। कहने का अर्थ है कि कम पैसे वाले लोग भी यथासंभव अपनी बुद्धि का प्रयोग पोशाक के चयन में भी करते हैं। यह काफी हद तक अच्छी बात है। समस्या तब आती है जब विभिन्न असमानताओं से भरे हमारे देश में पहनावा हमारा स्टेटस सिंबल या कहें दिखावे की वस्तु बन जाता है। लोग दिखावे में आकर अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई फैशन के चक्कर में अपने कपड़ों पर खर्च करते हैं। अमीर का तो इसमें नाम मात्र का आर्थिक नुकसान होता है। वहीं गरीब तो बेचारा मारा ही जाता है। मध्यम आय वर्ग के लोग भी फैशन के आर्थिक बोझ के तले दब जाते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें जहाँ चाहें जैसे चाहें
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

20. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने साहित्यकार प्रेमचंद की गरीबी एवं खराब स्थिति पर व्यंग्य किया है। प्रेमचंद उच्चकोटि के साहित्यकार थे, जिन्हें टोपी की तरह सिर पर धारण किया जाना चाहिए था। उन्हें भरपूर सम्मान मिलना चाहिए था।, पर समाज में टोपी के बजाए जूते की कीमत अधिक आँकी जाती थी। जो सम्मान के पात्र नहीं है उन्हें मानसम्मान दिया जाता है। यहाँ तो स्थिति यह है कि टोपी को जूते के सामने झुकना पड़ता है। प्रेमचंद की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वे अपने दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी कठिनाई से कर पाते थे। साहित्यकार होने के बाद भी उस समय समाज के कथित ठेकेदारों ने उनके सामने अनेक कठिनाई खड़ी की हुई थी।

21. प्रेमचंद का स्वभाव सरल और सहज था । आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद भी अपने जीवन से संतुष्ट थे । उन्होंने अपनी स्थिति को कभी भी किसी से नहीं छिपाया | उन्होंने स्वयं को कभी यथार्थ से अलग नहीं किया | फटे जूतों में अपनी फोटो खिंचाना उनकी हीनता और कमी को प्रकट करता है पर उन्हें इस बात का लेशमात्र भी संकोच नहीं था । लेखक ऐसे नहीं थे । वे अपनी कमियों को छिपाते थे इसलिए ऐसी परिस्थिति में वे कभी भी फोटो न खिंचाते ।

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App